Vol 6 Issue 9 oct 2016
ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

पौड़ी गढ़वाल में रामलीला मंचन के विविध आयामः—एक ऐतिहासिक अध्ययन

डी. पी. सकलानी1 , शिवानी रावत[2]
प्रोफेसर[1]
शोधार्थिनी[2]
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे.न.ब.ग.वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड.

सारांशः
भारतीय उपमहाद्वीप में रामायण परंपरा सदियों से प्रभावशाली रही है। रामायण परंपरा का रामलीला स्वरूप संपूर्ण देश में प्रचलित है। रामलीला एक व्यवस्थित मंचीय कला के रूप में उत्तराखंड में प्रचलित है। यह बहुत सी रंगमंचीय कलाओं यथा— संगीत, नृत्य, वादन, साज—सज्जा, गायन, अभिनय आदि का समन्वित रूप है। उत्तराखंड के विभिन्न स्थानों में रामलीला मंचन शताब्दी वर्ष पूर्ण कर चुका है। पर्वतीय रामलीला का सर्वप्रथम मंचन कुंमाऊ मण्डल के अल्मोड़ा नगर में हुआ। तत्पश्चात गढ़वाल मण्डल के पौड़ी, लैंसडाउन, सुमाड़ी, देहरादून, श्रीनगर, कोट्द्वार, देवप्रयाग, ऋषिकेश आदि अपेक्षाकृत छोटे—बड़े कस्बों, ग्रामीण क्षेत्रों में यह सिलसिला फैलता चला गया। गढ़वाल की रामलीला में सर्वधर्म समभाव परिलक्षित होता है। 1960 के पश्चात कुंमाउनी भाषा एवं गढ़वाली भाषा में भी रामलीला मंचन दूरस्थ क्षेत्रों में आरम्भ हुआ। गढवाल में रामलीला मंचन से पूर्व दो से तीन माह की कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में गढ़वाल मण्डल में रामलीला मंचन की ऐतिहासिकता, रामलीला मंचन के विविध आयाम एवं स्वरूप को अभिव्यक्त एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। समयानुरूप रामलीला मंचन में होने वाले परिवर्तनों एवं समाज पर उसके प्रभावों को भी समन्वित किया गया है।

प्रस्तावनाः
समुद्र से लेकर हिमालय तक रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है, यह विवादास्पद प्रश्न है। भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। किवदंति के अनुसार त्रेतायुग में श्री राम के वन गमनोपरांत अयोध्यावासियों ने 14वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परंपरा का प्रवर्तन हुआ।
हिमालयी क्षेत्रों में लीलाओं की पौराणिक परंपरा का उद्भव पन्द्रहवीं—सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन से हुआ, गोस्वामी तुलसीदास जी ने काशी में राम के प्रेरणादायक जीवन प्रसंगों को लोकधर्मी अभिनय रामलीला में समाहित किया। मेधाभगत ने रामलीला के वर्तमान स्वरूप को वैष्णव मंदिरों की झांकी की परिपाटी में आयोजित किया, जिन्हें तुलसी के मानस का आधार मिला तथा अपने भारत दर्शन, पुराण शास्त्र के ज्ञान एवं अध्ययन, अनुभव से इसे परिष्कृत किया।[1]
हरिवंश पुराण के 9वें अध्याय में रामचरित अभिनय का स्पष्ट उल्लेख है, जिसका आधार आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण है।[2] संस्कृत साहित्य के स्वर्णयुग में भी रामचरित संबंधी नाटक सबसे अधिक मिलते हैं, इनमें से अनेक नाटकों के अभिनीत होने का उल्लेख मिलता है। राम की उपासना एवं भक्ति को एक लीला के रूप में करना ही रामलीला कहलाता है। रामलीला एक प्रकार की उपासना है, जिसमें पूजा—विधि के समान भक्त अपने आराध्य के दर्शन पाता है। भक्त दर्शक इस लीला को तन्मयता से देखते हैं। रामलीला प्रदर्शन मात्र ही नहीं अपितु पढ़ी सुनी व देखी जाती है। रामलीला एक सांस्कृतिक पर्व है, जो इस बात का बोध कराती है कि असत्य एवं अन्याय पर सदैव सत्य एवं न्याय की ही विजय होती है। यह लीला अनुशासन एवं मर्यादा का निवेश करती है। यह समाज की अमूल्य निधि है। इसीलिये तुलसीदास, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, रूपमोहन आदि ने प्रभु की लीला करने का संकल्प लिया। लीला की वैष्णवता तो हर ग्राम एवं नगर में मुखर रहती है। इस प्रकार रामलीला समूची भारतीय संस्कृति, समूचे भारतीय ज्ञान व दर्शन का भव्य प्रदर्शन है। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की धरोहर है। भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी इसका भव्य प्रदर्शन होता है।

रामलीला का मंचन उत्तर तथा मध्य भारत के गांवों, कस्बों, शहरों तथा महानगरों में शारदीय नवरात्र के अवसर पर किये जाने का प्रावधान है। यह प्रमुखतः हिन्दी भाषी राज्यों में आयोजित होती है।[3] रंगमंचीय दृष्टि से लीला तीन प्रकार की होती है– सचल लीला, अचल लीला, स्टेज लीला। रामलीला स्टेज लीला का ही प्रारूप है। रामलीला की क्षेत्रगत विविधता ने रामकथा को आकर्षक और मनोहारी जीवंतता प्रदान की है, जिसमें स्थानीय कलाकार, सामान्यजन तथा लोकगायक अपने–अपने राम, दशरथ, सीता, अहिल्या, केवट, इत्यादि के चरित्र को गढ़ते हैं। वास्तव में रामलीला द्वारा ही रामायण एवं रामकथा का लौकिकीकरण हुआ है। रामलीला की सर्वग्रहीता लोकसंस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में सुपरिभाषित हुई है।

गढ़वाल में रामलीला का प्रारम्भ –

रामलीला पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड के विभिन्न स्थानों में आयोजित की जाती रही है, जिनमें सर्वप्रथम अल्मोड़ा कुमांउनी रामलीला की जन्मस्थली रही है। अल्मोड़ा में 1860 में दन्या के बद्रीदत्त जोशी ने नगर के बद्रेश्वर मैदान में पहली रामलीला आयोजित की।[4] गढ़वाल मण्डल में सांस्कृतिक नगरी पौड़ी में 1897में कांडई गांव पौड़ी में इसका मंचन स्थानीय लोंगों द्वारा आरम्भ हुआ एवं 1906 में भोलादत्त गैरोला, कोतवाल सिंह नेगी, तारादत्त गैरोला, बी0सी0त्रिपाठी आदि के प्रयासों से इसे वृहद् स्वरूप प्रदान किया गया।[5]

इसी क्रम में पौड़ी गढ़वाल क्षेत्र के अन्तर्गत लैंसडाउन, सुमाड़ी, कोटद्वार, देवप्रयाग, श्रीनगर, धारी गांव, जयहरीखाल आदि की रामलीला भी प्राचीन एवं लोकप्रिय है। लैंसडाउन में रामलीला का आयोजन 1903 से आरम्भ हुआ।[6] तत्कालीन ब्रिटिश शासन में अंग्रेजों के साथ आये कुछ कुमांउनी परिवारों ने इसे आरम्भ किया, जिसका श्रेय जीवनलाल शाह, शीशराम जोशी, कैलाश जोशी, राजू पधान, गंगादत्त शाह, मनीलाल शाह आदि को जाता है, जो अनवरत् जारी है।[7] 1940–42 में नगर में प्लेग फैलने के कारण तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के कारण रामलीला स्थगित हई, किन्तु 1950 से पुनः यह जीवनलाल शाह, रायबहादुर, मनोहर सिंह रावत आदि के प्रयासों से चल निकली।[8] लैंसडाउन के ही समीप स्थित छोटे से कस्बे जयहरीखाल में रामलीला का प्रारम्भ 1959 में हुआ, यहाँ रामलीला का प्रारम्भ देवकी नंदन चंदोला, कुंदन सिंह रावत, सरदार सिंह, जगदंबा प्रसाद, कीरत सिंह नेगी, दीनदयाल जोशी, जीत सिंह नेगी आदि ने किया।[9] जयहरीखाल में रामलीला का मंचन हिन्दू स्कूल के पास के खेत में प्रारंभ किया जाता था। कुछ वर्षों के पश्चात कस्बे में नवनिर्मित पंचायत घर में इसका मंचन किया जाने लगा। 1992 से 2005 तक यहाँ रामलीला बाधित रही, जिसका कारण समिति का आपसी मनमुटाव रहा।[10] वर्ष 2006 से कस्बे के जागरूक नवयुवकों द्वारा पुनः इसे जीवित किया गया। समिति के पास पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण यहां रामलीला मंचन दशहरा के बाद लैंसडाउन रामलीला के सहयोग से किया जाता है।

भगवान राम की तपस्थली देवप्रयाग में रामलीला का प्रारम्भ का कोई लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है। 1949 से स्वतंत्र भारत में टिहरी रियासत के विलय के पश्चात ही देवप्रयाग में रामलीला की शुरूआत मानी जाती है, एवं निरंतर आयोजित होती है।[11] यहां मशालों के उजाले में होने वाली रामलीला का स्थान 1966 से बिजली ने ले लिया।[12] देवप्रयाग में रामलीला नवम्बर–दिसम्बर में आयोजित की जाती है जब तीर्थ पुरोहित भगवान बद्री विशाल के कपाट बंद होने के पश्चात देवप्रयाग पहुंचते हैं। देवप्रयाग में रामलीला के पात्रों की भूमिका उन गांवों के लोग निभाते हैं जहां के तीर्थ पुरोहित होते हैं, इन गांवों में टिहरी एवं पौड़ी जिले के राणाकोट, पाली, सिराला, कोठी, चर्यू, धुरी, पोखरी, सौड़, वैद्यगढ़ आदि शामिल हैं।[13] गढ़वाल के प्रसिद्ध रामलीला मंचन में शामिल पौड़ी गढ़वाल जनपद की कल्जीखाल विकासखंड की मनियारस्यूं पट्टी के धारी गांव की रामलीला भी एक है। 1935 में मनोरंजन के लिये धारी गांव के कुछ युवकों ने रामलीला करने की योजना बनाई, सभी ग्रामीणों ने इस योजना को समर्थन एवं सहयोग दिया।[14] सर्वप्रथम यहाँ रामलीला का आयोजन गांव के पंचायती खेत में एक अस्थाई मंच पर किया गया। गांव के जितार सिंह मनिहारी, कुंवर सिंह चौहान, माधव सिंह मनिहारी, सुबुद्धि लाल आदि के द्वारा इसे आरम्भ कर प्रतिवर्ष आयोजित किया गया।[15] मशालों के उजाले में होने वाली रामलीला 1940 में लालटेनों में होने लगी, 1970 में हाथ से चलने वाले जनरेटर का प्रयोग किया गया, इसी दौरान यहां एक स्थायी मंच का निर्माण किया गया।[16] 1976 में रामलीला का विद्युतीकरण हुआ तथा 2001 से यहां एक बंद प्रेक्षाग्रह के अन्दर रामलीला होती है। यहाँ रामलीला का मंचन दिन में किया जाता है।

गढ़वाल के श्रीक्षेत्र श्रीनगर में रामलीला प्रारंभ करने का श्रेय प्रसिद्ध कवि, गाायक, देवीभक्त अम्बाशायर को जाता है। अम्बाशायर की कविताओं में कई रामलीला की धुनों का समावेश किया जाता रहा। श्रीनगर में रामलीला का प्रारम्भ 1896 से माना जाता है।[17] भाष्करानंद मैठाणी, मुंशीराम थपलियाल, नत्थी केसवान, टीकेश्वरानंद, कामेश्वरानंद पाण्डेय आदि वे नाम हैं जिन्होंने 1920 के दशक से लेकर पीढ़ियों तक विभिन्न चरित्रों को जीवंत किया।[18] भाष्करानंद मैठाणी 50 वर्षों तक रामलीला कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहे। यहां 1896 से 1907 तक रामलीला प्राचीन हनुमान मन्दिर के पास नागेश्वर गली में होती थी, 1907 से 1910 तक रामलीला कंसमर्दिनी मंदिर में हुई, 1910 से लगातार वर्तमान समय तक रामलीला, रामलीला मैदान में आयोजित की जाती रही।[19] यहां रामलीला का विद्युतीकरण 1971 में हुआ।[20] श्रीनगर के समीप स्थित सुमाड़ी गांव में भी रामलीला एक शताब्दी को पूर्ण कर चुकी है।

रामलीला के मंचीकरण की स्क्रिप्ट–

रामलीला का मंचन सम्पूर्ण भारतवर्ष में शारदीय नवरात्र के समय होता है। रामलीला का मूलाधार तुलसीदास कृत रामचरितमानस है। 1621 में सर्वप्रथम वाराणसी के अस्सी घाट पर नाटक रूप में रामचरितमानस को आधार मानकर रामलीला हुई । इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के कुछ राज्यों में श्री राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित रामायण भी रामलीला का आधार है। उत्तराखंड में मंचित होने वाली विभिन्न रामलीलाओं में कई पटकथायें प्रयोग में लाई जाती हैं। जैसे– तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस', वाल्मीकि कृत 'रामायण', बी0डी0जोशी कृत 'आदर्श रामलीला नाटक', अनुसूया प्रसाद काला संग्रहकृत 'रामलीला रामायण', यशवंत सिंह कृत 'आर्य संगीत रामायण', राधेश्याम का 'रामलीला नाटक', छम्मीलाल ढौंडियाल कृत 'श्री सम्पूर्ण रामलीला अभिनय', शिवचरण पाण्डे सम्पादित 'कुंमाउनी रामलीला गीत नाटिका', सरदार यशवंत सिंह वर्मा लिखित 'आर्य संगीत रामायण', और गुणानन्द पथिक रचित 'गढ़भाषा लीला रामायण' प्रमुख हैं।[21] उत्तराखंड में रामलीला की समृद्ध परंपरा होने के कारण रामचरितमानस के कथानक पर आधारित रामलीला के सभी चरित्र दर्शकों के मन के साथ जुड़े हैं। रामचरितमानस की अवधी भाषा सबकी समझ में आ जाती है। इसके साथ–साथ कुछ पद अलग से बनाकर भी रामलीला में प्रयुक्त किये जाते हैं। इसमें दोहा, चौपाई, प्रमुख हैं। गद्य संवाद बहुत ही कम होते हैं। कुंमाऊ में मुन्स्यारी के क्षेत्र में कुंमाउनी भाषा में तथा गढ़वाल में टिहरी एवं उत्तरकाशी के क्षेत्रों में गढ़वाली भाषा में रामलीला होती है,

जिसका श्रेय ब्रजेन्द्र लाल शाह को जाता है। पचास के दशक में इन्होंने पूरे क्षेत्र में घूमकर लोकगीतों व लोकधुनों का संकलन करके लोकभाषा में रामलीला तैयार की।[22] रामचरितमानस के आधार पर इन्होंने 480 कुमांउनी तथा 480 गढ़वाली गीतों में राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की पूरी रामलीला लिख डाली जो मुन्श्यारी, थल, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, बागेश्वर, रानीखेत, उत्तरकाशी, जोशीमठ, गौचर आदि स्थानों की रामलीला का आधार है।[23] पौड़ी गढ़वाल में पौड़ी, लैंसडाउन, कोट्द्वार, सुमाड़ी, देवप्रयाग जैसे स्थानों में रामचरितमानस के साथ ही छम्मीलाल ढौंडियाल द्वारा रचित सम्पूर्ण रामलीला भी बहुप्रचलित है। यह पुस्तक गेय शैली की रामलीला को भी समृद्ध करती है। यह गढ़वाल से बाहर भी लोकप्रिय है। समय–समय पर स्थान विशेष में संगीतज्ञों द्वारा स्क्रिप्ट में परिवर्तन भी परिलक्षित होता है।गुणानन्द पथिक की गढ़वाली लीला रामायण पूर्णतः गढ़वाली में रचित है। इन्होंने अपने सहयोगियों के साथ 1977 में पहली बार गढ़वाली में रामलीला का सफल मंचन किया। समय के साथ यह गढ़वाल के अनेक गांवों में लोकप्रिय हुई। गढ़वाली, कुंमाउनी, ब्रज, पंजाबी, उर्दू, अवधी इत्यादि भाषा तथा बोलियों के शब्द भी स्क्रिप्ट में समय समय पर संगीतज्ञों द्वारा जोड़ दिये गये। 1947 में देश के आजाद होने पर पौड़ी रामलीला में मथुरा प्रसाद जी ने राम पर आधारित गीत को स्क्रिप्ट में जोड़ा जो स्वतंत्रता प्राप्ति की याद दिलाता है तथा आज भी रामलीला में गाया जाता है।[24]स्क्रिप्ट में स्थानीय जनता की समझ के अनुसार परिवर्तन किये जाते हैं, जिसे प्रत्येक वर्ग आसानी से आत्मसात कर सके।

रामलीला मंचन में पात्रों की वस्त्र सज्जा, मुखौटे एवं मेकअप व्यवस्था–

रामलीला मंचन में मुख्यतः रंग–बिरंगे परिधानों , चमकीले एवं सुनहरे रंग की कढ़ाई का कार्य किया जाता है। रामलीला के पात्रों में ऋषि, राम, लक्ष्मण, सीता वनवासी वस्त्रों के रूप में पीले रंग के वस्त्र धारण करते हैं। गढ़वाल की रामलीलाओं में वस्त्रों में राजस्थानी, पहाड़ी, एवं दक्षिण भारतीय एवं उत्तर भारतीय वस्त्र सज्जा प्रदर्शित होती है। पौड़ी रामलीला में वस्त्रों की व्यवस्था मथुरा एवं दिल्ली तथा स्थानीय स्तर पर की जाती है। लैंसडाउन रामलीला में कमेटी के सदस्य राम, लक्ष्मण की वनवासी वेशभूषा, कुण्डल, बाजूबन्द, रावण, दशरथ, जनक के कोट व इसका पिछोड़ा, हनुमान की पीतल की गदा, शिव की जटा व त्रिशूल, मुनियों की दाड़ी, क्रेप, अहिरावण के दरबार का पर्दा, सोने के मृग की छाल, परशुराम का फरसा, पीले व सफेद पजामे, आदि को विशेषतः दिल्ली के किनारी बाजार से खरीदा जाता है।[25] यह बाजार रामलीला के सामान की दुकानों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ से विभिन्न कमेटियाँ रामलीला के मुखौटे, हथियार, आदि खरीदती हैं। रामलीला कमेटियाँ प्रतिवर्ष आवश्यकतानुसार खरीदारी करती है। जनता द्वारा दिये गये चन्दे से ही वस्त्रादि की खरीदारी की जाती है। पौड़ी रामलीला में बी0मोहन नेगी, सुबोध रावत, आशा रावत, सूर्य प्रकाश गैरोला, विक्रान्त रावत, पात्रों की वस्त्र सज्जा एवं रूप–सज्जा का कार्य करते हैं। जहां तक आभूषणों की बात है तो रामायण युग के पात्रों की कल्पना जिस रूप में जनता करती है उस युग की आभूषण शैली के अनुरूप ही आभूषणों का प्रयोग किया जाता है।[26] वस्त्र सज्जा में भी राजश्री परम्परानुसार ही वस्त्रों का चुनाव किया जाता है, जटाओं से लेकर मुखौटों तक का प्रयोग पात्र चरित्रानुसार किया जाता है, जिससे पात्र तथा घटनाओं के सामंजस्य के साथ मंचन का एक परिष्कृत रूप दर्शकों के सम्मुख आये। रामलीला में समयानुसार रूप सज्जा में भी परिवर्तन हुये हैं। पहले पात्रों के चेहरे पर जिंक ऑक्साइड का प्रयोग होता था जिसका स्थान अब पेन केक ने ले लिया है, जिसे फोटोग्राफी व वीडियो कवरेज के हिसाब से उपयुक्त माना जाता है, इसमें वर्ण के अनुसार चेहरे की आभा निखारी जाती है, साथ ही आधुनिक रूपसज्जा की तकनीक से भी मेकअप परिष्कृत हुआ है।[27] श्रीनगर रामलीला में मुन्ना नाम से विख्यात गोविंद लाल मिस्त्री मुखौटे एवं धनुष बनाने की कला में माहिर थे। वे कई वर्षों तक पात्रों के हथियार आदि बनाने का कार्य करते रहे। रामलीला कमेटियों के पास वस्त्र, आभूषणों, हथियार आदि का आने वाले वर्ष में पुनः उपयोग हेतु स्टोर रूम की व्यवस्था की जाती है जिससे सामान सुरक्षित रहे।

पात्र चयन के मापदण्ड एवं महिला पात्रों का रामलीला में समावेश –

गढ़वाल के क्षेत्रों में रामचरितमानस के अतिरिक्त पहाड़ी लोक रामायण भी ग्राम्य क्षेत्रों में प्रचलित है। रामलीला के लिये हर वर्ष गांव या शहर में रामलीला कराने वाले पदाधिकारी उपयुक्त पात्रों की तलाश में रहते हैं। गढ़वाल में पौड़ी की 113 वर्ष पुरानी रामलीला में कलाकारों का चयन कमेटी द्वारा पूर्ण निष्पक्ष रूप में किया जाता है। किसी प्रकार के पक्षपात की कोई गुंजाइश नहीं होती। किसी भूमिका के लिये यदि अधिक कलाकारों ने स्वयं को प्रस्तुत किया तो कमेटी प्रतियोगिता के माध्यम से श्रेष्ठ कलाकार का चयन करती है। अनुशासन बद्धता कमेटी का मुख्य सिद्धांत है।[28] चयन का यह आधार अभिनय पक्ष में ही नहीं अपितु संगीत, गाायन, निर्देशन, वादन आदि में भी है। पौड़ी की रामलीला में समय के साथ–साथ सर्वप्रथम छोटे–छोटे पात्रों से महिला पात्रों की भूमिकायें करायी गयी जैसे–अहिल्या, गौरी, आदि, फिर सीता के पात्र के साथ 2002 में पहली बार महिला पात्रों की भूमिका महिला द्वारा ही अभिनीत की गयी।[29] दर्शकों को यह प्रयोग बहुत भाया और आज रामलीला मंचन में समस्त महिला पात्रों की भूमिकायें महिला पात्र ही अभिनीत कर रही हैं। इनका प्रतिवर्ष कमेटी योग्यतानुसार चयन करती है। लैंसडाउन रामलीला के संयोजक पात्रों के चयन हेतु विद्यालयी कार्यक्रमों के दौरान नजर रखते हैं, प्रतिभाशाली बच्चों से सम्पर्क करते हैं तथा मंच को प्रतिभा प्रदर्शन का मार्ग बताते हैं।[30] कई लोग स्वतः पीढ़ी दर पीढ़ी रामलीला मंचन से जुड़े रहते हैं एवं विभिन्न रूपों में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। लैंसडाउन में भी 2004 से महिला पात्रों को शामिल किया जाने लगा है।[31] महिला पात्रों को बाहर से भी बुलाया जाता है। रामलीला कमेटी उनके खाने–पीने, रहने एवं सुरक्षा की पूरी व्यवस्था करती है। कमेटी द्वारा कोशिश की जा रही है कि आने वाले समय में नगर की बालिकायें ही महिला पात्रों की भूमिका पूर्णतः जीवंत करे। इसी क्रम में देवप्रयाग, सुमाड़ी, कोट्द्वार में भी रामलीला पात्रों का चयन उनकी योग्यता के आधार पर कमेटी द्वारा किया जाता है तथा पात्रों को उचित प्रशिक्षण दिया जाता है। पौड़ी एवं लैंसडाउन के अतिरिक्त गढ़वाल के समस्त क्षेत्रों में रामलीला मंचन में समस्त स्त्री पात्रों की भूमिकायें भी पुरूषों द्वारा ही निभायी जाती है। श्रीनगर में विभिन्न कलाकार जो रंगमंच से जुड़े रहते हैं वे भी रामलीला में अभिनय करते हैं तो दूसरी ओर कोट्द्वार में भी स्कूल–कॉलेजों के युवाओं को उनकी क्षमता के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाता है। यह कार्य रामलीला कमेटी में शामिल अभिनय एवं संगीत के वरिष्ठ एवं मर्मज्ञ लोंगों द्वारा ही किया जाता है।

रामलीला मंचन पूर्व कार्यशाला का आयोजनः

रामलीला मंचन देखने में जितना सहज है मंच पर चरितार्थ करना उतना ही कठिन, अतः रामलीला मंचन से पूर्व अभ्यास हेतु कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला द्वारा प्रतिवर्ष रामलीला में सम्मिलित होने नाले नये पात्रों को गायन, वादन, अभिनय, नृत्य, भाव–भंगिमा आदि विधाओं में पारंगत किया जाता है। गढ़वाल के सभी प्रमुख नगरों, कस्बों, गांवों में रामलीला से पूर्व प्रबंधन समिति द्वारा कम से कम 45दिन की

कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिसमें समिति प्रतिवर्ष रामलीला में होने वाले नये प्रयोंगों का अभ्यास एवं नये पात्रों का चयन करती है। प्रत्येक पात्र को भली–भांति अभ्यास करवाया जाता है जिससे वह अपना कार्य बखूबी करे। कार्यशाला में बाल कलाकारों से लेकर मुख्य चरित्रों के कलाकार, गाायक ,वादक, संगीतज्ञ आदि सभी अभ्यास करते हैं। इन्हीं कार्यशालाओं में पात्रों की वस्त्र, रूप–सज्जा, मंच व्यवस्था, आदि सभी छोटी–बड़ी समस्याओं को हल किया जाता है। समिति के सभी अधिकारी अपने–अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हैं, जिससे उचित समय पर रामलीला सुचारू रूप से हो सके। मुख्यतः ये कार्यशालायें सांय से रात्रि तक लगभग तीन घण्टे चलती हैं।

मंच सज्जा एवं मंच व्यवस्था –

रामलीला मंचन में सुव्यवस्थित मंच सज्जा एवं संचालन एक महत्वपूर्ण पहलू है। पौड़ी में रामलीला की शुरूआत में प्रकाश व्यवस्था हेतु एक स्थानीय ज्वलनशील लकड़ी जिसे स्थानीय भाषा में छिल्ला कहते हैं, का प्रयोग किया जाता था।[32] 1930 में इसका स्थान पेट्रोमैक्स ने ले लिया, इस दौर में गायन पक्ष में माइक के अभाव के कारण ऊँचे स्वर वाले गायकों को तरजीह दी जाती थी।[33] 1947 में रामलीला मंचन के समय रामलीला मंच के एक ओर स्वतंत्रता की खुशी में सुभाष चंद्र बोस का फोटो (छायाचित्र) लगाया गया। 1957 में नगर के विद्युतीकरण के साथ रामलीला में चार चांद लगये।[34] नई–नई लाइटों के साथ रामलीला का मंचन शुरू हुआ, साथ ही रामलीला में नाट्यविधा का समावेश किया गया। 1980 के बाद नवीन तकनीक विकास के साथ रामलीला में भी तकनीक के प्रयोग से सैट्स बनाने के साथ ही प्रसंगों के मंचन का दौर शुरू हुआ।[35] मंच पर मंच निर्देशक का दायित्व होता है– रामलीला के पौराणिक स्वरूप को आधुनिकता के साथ कायम रखना। पौड़ी रामलीला के चित्ताकर्षक दृश्यों में जंगलों व पर्वतों की बेहतरीन चित्रों को अपने दृश्य संयोजन से संवारने वाले चित्रकार थे– दिनेश बडोनी एवं राजेन्द्र रावत। जहां दिनेश जी के चित्र पर्वत व हिमालय से सम्बन्धित रहे, वहीं राजेन्द्र जी के चित्र जंगलों के सजीव चित्रण, वनों में विचरण करते जीव, बहती नदियाँ आदि से सम्बन्धित रहे।[36] कमेटी द्वारा इन चित्रों को आज भी संभालकर प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में यहाँ की रामलीला में नये स्टेज को भव्य रूप दिया गया है। दर्शक दीर्घा में बैठने की उचित व्यवस्था है, रामलीला का भव्य स्टेज, भवन एवं मंदिर रामलीला मैदान में आधुनिक रूप में मौजूद है, जो इसके विकास की गति को दर्शाता है।

जयहरीखाल की रामलीला में 1980 से पूर्व दर्शक स्वयं अपने घर से दरी, पट्टी आदि लाते थे किंतु 1980 के बाद समिति ने दर्शकों के बैठने के लिये दरियां और बैंच की व्यवस्था की।[37] रामलीला के परदों को पहले कस्बे के ही नंदन सिंह रावत तैयार करते थे एवं राजदरबार का दृश्य स्वयं बनाते थे किंतु पूंजी आने के बाद मंच हेतु समिति ने राम–दरबार, जंगल दृश्य के बड़े परदे सुशोभित किये।[38] लैंसडाउन में रामलीला मंचन से पूर्व मंच बनाने हेतु रेजिमेन्टल सेक्टर के बाक्सिंग रिंग से तख्ते लाये जाते हैं। मंच सज्जा का कार्य एवं दर्शकों के बैठने की व्यवस्था करने का कार्य नगर के भोलू शर्मा एवं उनकी टीम करती है, इनका कार्य टैंट, कुर्सी की व्यवस्था से लेकर मंच सज्जा तक का है, जिसमें रामलीला कमेटी के सदस्य पूरा सहयोग करते हैं।[39] लैंसडाउन रामलीला में प्रतिवर्ष मंच पर द्वीप प्रज्ज्वलन से सम्बन्धित सामग्री एवं व्यवस्था शहर की ही रंगकर्मी भावना वर्मा निभाती हैं। रामलीला समिति एवं कैंट बोर्ड का बैंड दोंनों रामलीला में होते हैं। दीर्घकाल से यहाँ मंच संचालन रामलीला कमेटी के वर्तमान सचिव अश्विनी कोटनाला निभा रहे हैं। समय के साथ तकनीक के प्रयोग से रामलीला आकर्षक हुई है। प्रोजेक्टर के माध्यम से कुछ दृश्यों का मंचन किया जाता है। सीता –हरण, राम–रावण युद्ध जैसे दृश्यों को नये तरीके से पेश किया जाता है। श्रीनगर की रामलीला मंचन में प्रथम दिवस कैलाश–लीला से लेकर तृतीय दिवस ताड़का वध तक का मंचन प्राचीन कमलेश्वर मंदिर में होता है, कमलेश्वर मंदिर को श्री राम की तपस्थली माना जाता है अतः रामलीला का प्रारंभ यहीं से होता है किन्तु चतुर्थ दिन से रामलीला का आयोजन रामलीला मैदान में भव्य रूप में किया जाता है।[40] धारी गांव की रामलीला का मंच जो कि 1935 से पूर्व एक खुला खेत था वह 1940 में रामलीला मैदान कहलाया, 1970 में रामलीला मंचन हेतु हाथ से चलाने वाले जनरेटर खरीदे गये, तथा 1976 में रामलीला के साथ ही गांव का भी विद्युतीकरण हुआ।[41] 2001 में यहाँ का रामलीला मैदान में पूर्णतः बन्द प्रेक्षाग्रह का निर्माण किया गया। तकनीक ऐसी उत्कृष्ट कि प्रेक्षाग्रह में तीन मंच हैं जिसमें एक के बाद एक दृश्य बिना विराम के चल सकते हैं। दर्शक दीर्घा से लेकर मंच तक सब पक्की छत के नीचे है, कम्प्यूटर आधारित आधुनिक माइक तथा विद्युत व्यवस्था के लिये वैकल्पिक सुविधाएं सभी आधुनिक स्वरूप में मौजूद हैं। रामलीला के स्वरूप के साथ पूरे गांव की तस्वीर ही बदल गयी। कोट्द्वार के विषय में लिखित इतिहास तो उपलब्ध नहीं है किन्तु मालवीय उद्यान में होने वाली रामलीला 100 वर्षों से अस्तित्व में है। यहाँ कई रामलीला कमेटियाँ हैं, जिनमें से वर्तमान में अत्यंत प्रचलित श्री बाल रामलीला कमेटी पिछले 25 वर्षों से अस्तित्व में आई है, जिसके कोषाध्यक्ष एवं मंच निदेशक पंकज कुमार अग्रवाल हैं। वे स्वयं मंच–सज्जा एवं निर्देशन का कार्य करते हैं, पूर्व में छोटे से मैदान में होने वाली रामलीला अब भव्य रूप में रामलीला मैदान में होने लगी है। यह कमेटी साल दर साल रामलीला के मंच को बेहतर बना रही है।

संगीत, शैली एवं वाद्ययंत्र–

आधुनिक रंगमंच पर रामलीला की विविध शैलियों के आविर्भाव के बावजूद रामकथा का अंतःसूत्र अविछिन्न रहा। गढ़वाल में कई स्थानों पर लोकवाद्यों व लोकगीतों के माध्यम से रामलीला प्रस्तुत की जाती है। 1890 में पारसी जुबली कम्पनी पूना के निदेशक मिर्जा नजीर बेग ने शुद्ध उर्दू में "मार्क ए लंका मारूफब" रामलीला नाटक को ओपेरा के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका प्रभाव आज भी रामलीला मंचन विशेषतः उत्तराखण्ड में स्पष्ट है।[42] गेय संवाद एवं सरल संवादों की धुन, लय ,ताल एवं स्वर पारसी थियेटर से मिलते हैं भले ही शब्दों में परिवर्तन आया हो। संगीत पक्ष की दृष्टि से पौड़ी की रामलीला अपने आप में चित्ताकर्षक एवं कर्णप्रिय है। स्क्रिप्ट में शामिल अधिकांश रचनायें शास्त्रीय रागों पर आधारित हैं। राग मालकौंस, विहाग, जै– जैवन्ती, देश बागेश्री, जौनपुरी आदि विभिन्न रागों से निरूपित रचनाओं के विभिन्न शास्त्रीय तालों तीनताल, झपताल, दीपचन्दी, रूपक, दादरा, कहरवा आदि में निबद्ध किया गया है।[43] इसके अतिरिक्त स्क्रिप्ट में तुलसीदास कृत रामचरितमानस के दोहों व चौपाइयों को भी शामिल किया गया है, जिन्हें विभिन्न धुनों में ढ़ाला गया है एवं समय के साथ थोड़ा परिवर्तन के तौर पर कुछ क्लिष्ट चौपाइयों को नयी पीढ़ी के संगीतज्ञों ने नये अंदाज में ढ़ालकर सुगम एवं कर्णप्रिय बनाने की कोशिश की है।[44] शेष राग आधारित रचनाओं का अक्षरशः पूरे मनोयोग से अनुसरण किया जाता है। यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी युवाओं ने शास्त्रीय संगीत को आत्मसात किया है तथा समय के साथ –साथ संगीत के विभिन्न वाद्ययन्त्रों का समावेश पार्श्व संगीत को आकर्षक बनाने में किया गया है। रामलीला के प्रारम्भिक दौर में वाद्ययन्त्रों में तबला, ढ़ोलक, हरमोनियम प्रयोग किया जाता था। कभी–कभी गीतों में राग के अनुसार गीतों का सौंदर्य बढ़ाने हेतु अन्य स्वरों का भी प्रयोग किया गया। कई वाद्ययन्त्र समय के साथ जुड़ते चले गये जैसे– सितार , पखावज, वायलिन आदि। यहां एक ओर ध्रुपद, धमार, ठुमरी, खयाल आदि राग हैं तो दूसरी ओर लोक

संगीत भी है।[45]संगीत ही रामलीला की आध्यात्मिकता को समृद्ध करता है। श्रीनगर में प्रारंभ में लीलानंद नौटियाल जी रजाखानी व मसीतखानी गतें बजाया करते थे ,राग तिलक कामोद, चौपाई, कहरवा ताल, रामलीला का अभिन्न अंग थी।[46] प्रारंभ में श्रीनगर में रामलीला दिन में होती थी तब ढ़ोलक, खंजड़ी, चिमटा, घुंघरू मुख्य वाद्ययन्त्र होते थे। हारमोनियम का प्रयोग यहाँ बहुत बाद में हुआ। शम्भूनाथ श्रीवास्तव यहाँ की रामलीला में दीर्घकाल तक तबला वादन करते थे। श्रीनगर की रामलीला में प्रारंभ में अच्छे संगीतकारों की धुनों का समावेश होता था किन्तु समय के साथ संगीत में कुछ चलतापन सा आने लगा। तुलसी की चौपाइयाँ तो पुराने ढ़ंग से ही गायी जाती हैं। राधेश्याम तर्ज वाली रामायण का भी प्रभाव पड़ा। इस तर्ज के बाद बहरेतबील भी अधिक मात्रा में प्रयुक्त हुई है, यह जसवंत जी की रामायण से उद्धृत की जाती है, इसकी विशेषता है भड़कीली अदाकारी और रोचक संवाद। वर्तमान में ढोलक वादन में मुख्य रूप से कहरवा और दादरा का प्रचलन है, अन्य वाद्यों में अब वायलिन का प्रयोग भी किया जाने लगा है। लैंसडाउन रामलीला के मंचन में कुंमाउनी रामलीला की गहरी छाप है। यहां की रामलीला विशुद्ध रूप से पारंपरिक शैली पर आधारित है जिसमें दोहे, चौपाइयों, राग—रागिनी का समावेश है। यहां की रामलीला में प्रारंभिक दौर के वाद्ययन्त्रों में तबला, ढ़ोलक, हारमोनियम, मंजीरा बजाया जाता था। लैंसडाउन रामलीला के संगीत पक्ष में नजीबाबाद का बैंड भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यह प्राचीन समय से आज तक अनवरत् अपनी सेवा दे रहा है। यह बैंड रामलीला के समस्त दिनों में प्रतिदिन भक्ति गीत एवं लोकगीत गाते हुये नगर भ्रमण कर रामलीला मंच पर पहुँचता है। कई स्थानीय एवं आस—पास के लोग रामलीला में बैंड की सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं किंतु रामलीला कमेटी के अनुसार यह पुराने समय से चली आ रही परम्परा है जो बदस्तूर जारी है।[47] देवप्रयाग में रामलीला की विशेषता है कि यहाँ की रामलीला संवादरहित है, इसमें सिर्फ शुद्ध राग—रागनियों से बंधी चौपाइयाँ होती हैं।[48] रामलीला के पात्र कोई भी हो वह अपनी बात चौपाई के माध्यम से ही बोलते हैं। समस्त क्षेत्रवासियों को भी सस्वर ये चौपाइयाँ कंठस्थ हो जाती हैं। देवप्रयाग की रामलीला को राग—रागनियों से संगीतबद्ध करने का श्रेय बांकेलाल टोडरिया बांके गवैया को जाता है।[49]

रामलीला मंचन की व्यवस्था—

रामलीला मंच भारत में रंगमंच की प्रथम पाठशाला है। रामलीला के दस दिवसीय मंचन को सुचारू रूप से चलाने हेतु एक समिति के गठन की आवश्यकता होती है जिसे रामलीला समिति कहा जाता है। जिसमें विभिन्न विचारों, विभिन्न धारणाओं और अलग—अलग व्यक्तित्व के लोग मिलकर रामलीला को आयोजित करते हैं। रामलीला समितियों का गठन स्थानीय आधार पर शहर एवं गाँव के जागरूक युवा वर्ग द्वारा किया जाता है। जिसमें स्थानीय स्तर के लोग ही चयनित होते हैं। इन्हें संगीत, साज—सज्जा, मंच—निर्देशन, नृत्य, गायन, आदि अनेक विधाओं की निपुणता के आधार पर चुना जाता है। समिति में एक अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंच—निर्देशक आदि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति की जाती है। जो अपना दायित्व पूर्ण तन्मयता से निभाते हैं। रामलीला की व्यवस्था उसके संचालन करने वाले सूत्राधार पर निर्भर करती है। वह रंगमंचीय व्यवस्था का पूरा ध्यान रखता है।

रामलीला संचालन के आर्थिक संसाधन—

रामलीला के आय—व्यय का ब्यौरा पूरी पारदर्शिता के साथ जनता के सम्मुख रखा जाता है। यह दायित्व रामलीला समिति के कोषाध्यक्ष एवं लेखाकार का होता है। आय—व्यय के बाद रामलीला समिति के खाते में जो धनराशि शेष रहती है वह आने वाली रामलीला के आयोजन के लिये संबल प्रदान करती है। रामलीला के दस दिवसीय मंचन के लिये आर्थिक संसाधन जुटाने का कार्य वित समिति करती है। रामलीला समितियों के पास आय का मुख्य स्त्रोत दर्शकों एवं श्रद्धालुओं द्वारा दी जाने वाली रामभेंट, व्यापारी वर्ग द्वारा दिया गया चंदा, विभिन्न विभागों एवं कर्मचारियों द्वारा दिया गया चंदा इत्यादि होता है। गढ़वाल की रामलीला कमेंटियों में प्रसिद्ध पौड़ी, लैंसडाउन, कोट्द्वार, कठूली, श्रीनगर की रामलीला समितियाँ स्थानानुसार दो से तीन लाख तक धन की व्यवस्था कर लेती हैं। यह धन रामलीला की दस दिवसीय मंचन एवं उसकी व्यवस्था पर व्यय किया जाता है। जिन व्यवस्थाओं में धनराशि व्यय की जाती है उनमें प्रमुख हैं— ध्वनि व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, पुतला निर्माण, विद्युत संयोजन, आतिशबाजी, साज—सज्जा, बैठक एवं टैण्ट व्यवस्था, वस्त्र एवं अस्त्र—शस्त्र की खरीद, जलपान व्यवस्था, कलाकारों को दिया जाने वाला पारितोषिक इत्यादि। यद्यपि रामलीला में अभिनय करने वाले कलाकारों को कोई आय प्राप्त नहीं होती है। समिति द्वारा रामलीला के समापन अवसर पर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। पौड़ी, लैंसडाउन, कोट्द्वार, सुमाड़ी, श्रीनगर आदि प्रसिद्ध रामलीला समितियों के बैंक अकाउंट हैं जिसमें रामलीला की शेष धनराशि को सुरक्षित रख लिया जाता है। बैंक अकाउंट रामलीला समिति के अध्यक्ष के नाम पर बने होते हैं। ये रामलीला समितियाँ प्रिंट मीडिया के माध्यम से खर्चे का पूरा ब्यौरा जनता के समक्ष पुस्तुत करती हैं जिससे समितियों की पारदर्शिता प्रदर्शित होती है तथा जनता का भरोसा सुदृढ़ होता है।

रामलीला में सर्वधर्म समभाव—

इसमें कोई सन्देह नहीं कि रामकथा ने लोंगों को समाज में एक आदर्श स्थापित करने की प्रेरणा दी है। विभिन्न स्थान विशेष की रामलीलायें इसका उदाहरण हैं। गढ़वाल के अर्न्तगत सुप्रसिद्ध पौड़ी की रामलीला ने विभिन्न संप्रदायों के लोगों के बीच जनजागरूकता पैदा करने का प्रयास किया है। अपनी विशिष्ट पहचान लिये हुए यहाँ हिन्दू , मुस्लिम, ईसाई समाज भी बढ़—चढ़कर भाग लेता है, इसमें मोहम्मद सिद्दीकी, सलारजंग, इलाहीबख्श हुसैन, इमामउल्ला खां के साथ ही ईसाई समुदाय के विक्टर का नाम प्रमुख है।[50] प्रत्येक समुदाय आर्थिक रूप से भी कमेटी को यथोचित सहयोग प्रदान करता है। अभिनय हो या पार्श्व संगीत या फिर नेपथ्य में किसी भी प्रकार का कार्य, सभी में प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों की भागीदारी होती है।

लैंसडाउन की स्थापना के बाद शुरूआती दशकों में मुसलमानों की आबादी यहां कम थी, इसके बावजूद रामलीला के आयोजनों में उनकी भागीदारी शुरू से ही बनी रही। हारमोनियम बजाने वाला साजिन्दा नजीबाबाद से बुलाया जाता था जो मुस्लिम था। अंगद के अभिनय में हमीद मियाँ दीर्घकाल तक बने रहे तो दूसरी ओर अलाउद्दीन के नेतृत्व में यहाँ आने वाले बैंड पार्टी अपनी पिछली तीन पीढ़ियों से रामलीला के लिये नाममात्र के मानदेय पर बैंड बजा रही है जिसे रामलीला का प्रत्येक दृश्य याद है कि कब कहाँ, कैसी धुन देनी है।[51] नौशाद मुस्लिम होते हुये भी रामलीला के कई छोटे—छोटे किरदार बखूबी निभाता है वहीं दूसरी ओर सलीम शत्रुघ्न का अभिनय करता है, साथ ही हबीब उर रहमान भी कमेटी के एक प्रमुख सदस्य हैं जो कमेटी की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति में अपना योगदान देते हैं।[52] धारी गांव में रामलीला प्रारंभ के वर्षों से आधुनिक

समय तक कोई भी मंच ऐसा नहीं रहा जब रामलीला में दलित वर्ग की भागीदारी न रही हो। गांव में सभी जाति के लोगों का समरसता एवं भाईचारे से रहना रामलीला की ही देन है।[53] गांव में रामलीला मंचन ही एक ऐसा आयोजन है जिसमें गांव के सभी लोग अपनी उपस्थिति देते हैं तथा मंच के भीतर भी जलपान आदि में कोई छुआछूत नहीं होता है, अतएव सामाजिक समरसता बनी रहती है।[54] इस प्रकार कोट्द्वार, श्रीनगर, जयहरीखाल, सुमाड़ी, कठूली, आदि में भी रामलीला में भी सर्वधर्म समभाव परिलक्षित होता है।

जनता का सहयोग एवं प्रतिक्रिया–

विश्व का एक बड़ा भूभाग रामलीला का रंगमंच है। रामलीला एक ऐसा आयोजन है जिसमें न तो कोई व्यवसायिक कलाकार भाग लेते हैं न ही कोई बड़ा संगठन, अपितु रामलीला में नगरवासी भाग लेते हैं। समिति के सदस्य भी नगर के ही लोग चुने जाते हैं। कलाकार कुछ समय के लिये आकर चले जाते हैं नगर अथवा गांव की जनता वहीं रहती है। सालभर अपनी पारिवारिक, व्यवसायिक, सामाजिक ताने–बाने से अलग हटकर शरद ऋतु में रामलीला के ग्यारह दिवसीय आयोजन में उनकी भागीदारी प्रत्येक क्षेत्र में होती है। रामलीला जैसे विशाल आयोजन के लिये अपनी–अपनी सामर्थ्यनुसार चंदा देना ,प्रकाश व्यवस्था, वस्त्र–सज्जा, रूपसज्जा आदि प्रत्येक छोटे बड़े कार्य में रामलीला समिति का सहयोग जनता द्वारा ही किया जाता है। रामलीला मंचन देश का सबसे बड़ा उत्सव है जो 11 दिन तक बिना किसी सरकारी सहयोग के आम जनता द्वारा पूर्ण होता है। पात्रों के उत्साहवर्धन हेतु जनता द्वारा उन्हें पारितोषिक भी दिया जाता है। रामलीला जैसे आयोजन में जनता के सहयोग का एक प्रमुख कारण इसका धार्मिक पक्ष है, जिसके फलस्वरूप मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के प्रति जन–जन का असीमित प्रेम का होना। इसके साथ–साथ रामायण परम्परा के पात्रों से लोग किसी न किसी रूप में जुड़ाव का अनुभव करते हैं। वहीं दूसरी ओर आम नागरिकों को रामलीला मंच के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करने का माध्यम मिल जाता है। छोटे–छोटे बच्चे अभिनय कर स्वयं को भावी जीवन के लिये तैयार करते हैं। रामलीला मंचन की 11 दिवसीय परम्परा विश्व में अपने तरीके का सबसे बड़ा एवं दार्घकाल से चला आ रहा एक अनोखा आयोजन है, जो साधारण जनता द्वारा आयोजित होता है। भारतीय जनमानस का इस आयोजन से बड़ा गहरा जुड़ाव है चूंकि इससे संस्कार एवं आस्था जुड़ी हुई है। रामलीला में उत्साह है, मनोरंजन है, साथ ही स्थानीय लोगों के लिये अभिनय, गायन, वादन जैसी विधाओं में स्वयं की प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर भी हैं। भिन्न–भिन्न विधाओं में नवोदित, अनुभवी, कुशल कलाकार इस भव्य आयोजन में अपना हुनर दिखाते हैं, योगदान देते हैं, अपनी जगह बनाते हैं और कुछ किरदार सदैव के लिये यादगार बन जाते हैं।[55]

रामलीला मंचन में हास्य–

सामान्यतः रंगमंचों में गंभीरता तथा एकरसता को दूर करने के लिये हास्य का पुट शामिल किये जाने की परम्परा है। हास्य जहाँ गम्भीरता तथा एकरसता को दूर करता है वहीं दर्शक का मनोरंजन भी होता है और वह आगे के दृश्यों को देखने के लिये उत्साहित होता है। वाल्मीकि रामायण अथवा रामचरितमानस में यद्यपि हास्य प्रसंग का उल्लेख नहीं है किन्तु जब इस महाकाव्य को नाट्य के रूप में प्रस्तुत किया गया तो इसमें हास्य की महद्यत्ता को महसूस किया गया। अलग–अलग स्थानों पर रामलीला का मंचन करने वाली कमेटियों ने देशकाल–परिस्थितियों तथा दर्शकों के मनोदशा के अनुरूप हास्य अंशों को सम्मिलित किया। लैंसडौन रामलीला में हास्य का समावेश 1954–55 में राजू पधान जी ने किया।[56] यद्यपि रामलीला में कहीं भी हास्य प्रसंग नहीं है फिर भी राजू पधान ने अपने अभिनय से हास्य को एक नयी ऊंचाई प्रदान की। राजू पधान एवं ठाकुरलाल शाह अपनी जुगलबंदी से दर्शकों को हँसाने पर मजबूर कर देते थे। कई बार रामलीलाओं में प्रारंभिक दौर में बाहर से नर्तकी भी बुलाई जाती थी। रामलीला में हास्य को स्थान देने के पीछे कारण यह था कि तत्कालीन दौर में जब घरों में मनोरंजन के कोई भी साधन उपलब्ध नहीं थे। गांवों में विद्युत तक नहीं थी, उस दौर में रामलीला ही मनोरंजन का एकमात्र ऐसा आयोजन था जिसमें आस–पास के सभी गांवों के लोग बड़े विश्वास एवं आस्था के साथ शामिल होते थे। रामलीला में हर वर्ग, हर धर्म, हर रूचि के लोग होते थे, इसके दर्शक वर्ग में बच्चे, महिलायें, युवा, बुजुर्ग सभी होते थे। अतः उस दौर में रामलीला समिति द्वारा अपार जनसमूह को देर रात तक बांधे रखने के लिये हास्य के प्रसंग रामलीला में डाले जाते थे, चूंकि तब रामलीला रात्रि से लेकर भोर तक चलती थी, दूर गांवों के लोग प्रातःकाल ही वापस लौटते थे। ऐसे में दर्शकों को केवल गम्भीर दृश्य दिखाकर इतने समय तक बांधे नहीं रखा जा सकता था। दर्शको के सामने नर्तकी आदि के कार्यक्रम कराने के पीछे तर्क था कि उतने समय में समिति द्वारा मंच के पीछे के दृश्य बदल दिये जाते थे। पौड़ी की रामलीला में 1940 के दशक से मन्ना बाबू मानवर सिंह नेगी हास्य अभिनेता के रूप में दर्शकों के सामने आये एवं हास्य प्रधान भूमिका में कुंवर सिताब सिंह जी के साथ मन्ना बाबू मंच पर हास्य अभिनय करते थे।[57] हास्य की यह युगलबंदी सीता–स्वयंवर से लेकर सीता हरण तक बांधे रखती थी, वहीं दूसरी ओर मन्ना बाबू एवं तारीलाल शाह भी एकसाथ खर– दूषण के अभिनय में हास्य के वे संवाद डालते थे जो स्वरचित होते थे। ऐसे संवादों से स्वाभाविक ही दर्शकों का भरपूर मनोरंजन होता था। हास्य उस दौर में इतना प्रभावी था कि 1940 के समय जब दूर–दराज के लोग सैकड़ों मील दूर से मशालों के उजाले में रामलीला देखने आते थे तब भी सर्वाधिक दान वे हास्य कलाकारों के नाम पर ही देते थे। 1990 तक रामलीला मंच पर हास्य एवं व्यंग्य का दौर चलता रहा, 1990 में मन्ना बाबू की मृत्यु के बाद वह दौर स्वतः ही समाप्त हो गया।[58] तत्कालीन दौर में रामलीला ही जनता तक पहुँचने का एक माध्यम था, अतः कलाकार हास्य के माध्यम से कई बार जन समस्यायें भी उजागर करते थे, जिससे सभी क्षेत्रवासियों तक बात पहुंचे। किंतु वर्तमान समय में वैश्वीकरण के दौर में जनता के पास सम्पूर्ण संसाधन उपलब्ध हैं इसलिये रामलीला के मंच का प्रयोग सिर्फ रामलीला तक ही सीमित रहने लगा है। आधुनिक समय में रामलीला मंचन का समय घटाकर लगभग तीन घण्टे निश्चित कर दिया गया है, जिससे रामलीला में दर्शक वर्ग भी बना रहे तथा बिना किसी रूकावट के निरंतर रामलीला का दृश्यांकन होता रहे। इस प्रकार रामलीला के कलाकारों को भी आराम करने का पर्याप्त समय मिल जाता है, समय सीमित होने से रामलीला के मंच पर हास्य, व्यंग्य आदि कार्यक्रमों को समाप्त कर पूर्णतः धार्मिक भावना को समर्पित कर सिर्फ रामलीला मंचन पर ही बल दिया जा रहा है।

रामलीला का समाज पर प्रभाव–

राम तथा रामकथा भारत की सामाजिक संस्कृति के अविभाज्य अंग हैं। विश्व इतिहास एवं विश्व साहित्य में राम के समान अन्य कोई पात्र कभी नहीं रहा। वे मर्यादा पुरूषोत्तम, आदर्श राजा, आज्ञाकारी पुत्र, आदर्श पति होने के साथ ही प्रबल योद्धा भी हैं। रामायण में प्रस्तुत मर्यादा पुरूषोत्तम राम का उदात्त चरित्र ,परिवार व समाज में नाते रिश्तों का सम्यक सामंजस्य एवं पूर्णता की पराकाष्ठा लोगों को प्रेरित और प्रभावित

करने का प्रमुख कारण रहा है। रामायण में विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक एवं सार्वजनिक मूल्य धर्म, जाति ,क्षेत्र जैसे विभेदकारी कारकों से ऊपर उठकर वैश्विक क्षितिज पर मानवमात्र को प्रभावित करने में अनवरत् रूप से सफल रहे हैं। रामलीला में इसीलिए किसी न किसी रूप में उक्त विभेदकारी कारकों को भूलकर एक आदर्श जीवन के मूल्यों का प्रस्तुतीकरण विश्व के तमाम देशों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में ही सम्भव हो पाया है।

रामलीला के स्वरूप में निरंतरता एवं परिवर्तन–

कोई भी घटना या सांस्कृतिक आयोजन एक परम्परा के रूप में तभी विकसित हो सकता है जब जनमानस में इसके प्रति आस्था और उत्साह पैदा हो तथा एक पीढ़ी विरासत के रूप में इसे दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती रहे। भारत के प्राचीन राजनैतिक इतिहास के पृष्ठों में सूर्यवंशीय राजा दशरथ के पुत्रों के चरित्र एवं उत्कृष्ट जीवन गाथा को समाज के सम्मुख आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। रामकथा के लोकप्रिय होने के साथ–साथ इसका नाट्य रूप रामलीला भी एक परंपरा के रूप में लोकप्रिय हो गयी। काशी से आरम्भ होने वाली रामलीला संपूर्ण भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में कुछ परिवर्तनों के साथ मौजूद है। जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया, मालद्वीप, श्रीलंका, कम्बोडिया, नेपाल आदि अनेक देशों में रामलीला मंचन की प्राचीन परंपरा विभिन्न रूपों में अस्तित्व में है। उत्तराखंड में गढ़वाल एवं कुंमाऊ मण्डल के कई स्थानों में रामलीला मंचन की परम्परा अपनी शताब्दी वर्ष मना चुकी है। मनोरंजन के विभिन्न साधनों के दौर में भी किसी परंपरा का दीर्घकाल तक बने रहना विशेष है। रामलीला के स्वरूप में समय के साथ मंच, साज–सज्जा, मेक–अप, वीडियोग्राफी, वाद्य–यंत्र, वस्त्रादि के स्वरूप में परिवर्तन आया है। आधुनिकता के दौर में भी इसकी मूल भावना से कोई छेड़छाड़ नहीं की गयी। मनोरंजन के अनेक संसाधन होते हुए एवं इस भैतिकवादी युग में भी स्टेज प्रोग्राम में अपार जनसमूह को आकर्षित करना रामलीला समितियों के लिये एक चुनौती है। इसके बावजूद रामलीला मंच से जुड़े लाखों कार्यकर्ता निरंतर प्रयासरत हैं कि दर्शकों का रामलीला के प्रति आकर्षण समाप्त न हो।

वर्तमान में रामलीला की प्रासंगिकता–

श्री राम का चरित्र वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिक है। राम के आदर्शों पर चलते हुये व्यक्ति संयमित जीवन जीकर समाज को विकृतियों से मुक्त रख सकता है। रामायण अथवा रामचरितमानस कालजयी रचनायें हैं तथा कालजयी रचनाओं की सार्थकता एवं प्रासंगिकता युगों–युगों तक बनी रहती है। रामकथा में निहित आदर्श प्रत्येक युग में प्रासंगिक हैं तथा कलियुग में इसकी प्रासंगिकता और भी अधिक है। रामलीला जनसाधारण से जुड़ा हुआ एवं सामान्य जनता की पहुँच वाला मंच है। रामलीला में बहुत से पात्रों की आवश्यकता होती है इसलिए गांव–कस्बे का रामलीला मंच हो अथवा बड़े शहर का, अभिनय की अभिरूचि रखने वाले कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर मिल ही जाता है। रामलीला का मंच कई बड़े रंगकर्मियों, संगीतज्ञों, अभिनेताओं, थियेटर कलाकारों, मेकअप आर्टिस्टों आदि के लिये प्रारंभिक सीढ़ी का कार्य करता है। यदि आधुनिक समय में रामकथा प्रासंगिक न होती तो यह अनेक स्थानों पर अपनी 100वीं वर्षगांठ तक न पहुँचती। रामकथा के पात्र अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश समाज को देते हैं। आदर्श राजा, आदर्श पत्नी, आदर्श मित्र, आदर्श शिष्य, आदर्श सेवक, आदर्श भाई जैसे न जाने कितने पात्र रामलीला में मंचित होकर आधुनिकता के दौर में समाज को संदेश देते हैं। अतः रामलीला मानवीय मूल्यों की रक्षा करने की प्रेरणा देती है। इसी कारण पुनर्प्रस्तुति की यह परंपरा आज भी मंचन के रूप में विश्वभर में जारी है।59 तुलसीदास जी मानस में कहते हैं– श्री रामचन्द्र जी अनन्त हैं एवं उनकी कथाओं का विस्तार भी अनन्त है।[60]

निष्कर्षः

उत्तराखण्ड में रामलीला का समृद्ध इतिहास है। समय में परिवर्तन के साथ–साथ रामलीला मंचन में भी परिवर्तनशीलता आ रही है। रामलीला मंचन अपने प्रारम्भिक समय में संसाधनों की कमी के बावजूद वर्ष का सबसे भव्य कार्यक्रम होता था। पुराने समय में दूर–दराज गाँवों के सैकड़ो लोग मीलों दूर से रामलीला देखने आते थे। दस दिवसीय रामलीला की धमक वर्षभर बनी रहती थी। जनता अपने निजी जीवन में भी रामलीला के आदर्शवादी दृष्टिकोणों को अपने हृदय में संजोए रखती थी। भूमंडलीकरण के दौर में लोक परंपरा भी प्रभावित हुई है। रामलीला के मंचन में पारंपरिक वाद्यों का स्थान आधुनिक तीव्र ध्वनि के संसाधनों ने ले लिया है। कुछ स्थानों में रामलीला दृश्य संयोजन के समयांतराल में फिल्मी नृत्य , फूहड़ मनोरंजन को भी प्रस्तुत किया जाता है जो रामलीला की गरिमा को भंग करता है। मंच पर वह सधा हुआ अभिनय एवं संवाद अदायगी नहीं दिखलाई पड़ती जो रामलीला के आरम्भिक दौर में हुआ करती थी। यह लोक परंपरा के लिये घातक है। बहुधा युवा आबादी लोक परंपरा की ओर आकर्षित नहीं हो पा रही है। इन सभी कमियों के बावजूद गढ़वाल में होने वाली रामलीलायें आज भी आदर्श स्थापित किये हुए हैं। पौड़ी, लैंसडाउन, सुमाड़ी, देवप्रयाग, श्रीनगर की रामलीलायें आज भी लोक परंपरा को संजोए हुए अपने उन्नत स्वरूप में विद्यमान है। आधुनिक भैतिकवादी युग में टेलीविजन, इण्टरनेट के उपयोग से एक बड़ी चुनौती रामलीला मंच को मिली है। फिर भी रामलीला से जुड़े कार्यकर्ता निरंतर प्रयासरत हैं कि दर्शकों का रामलीला के प्रति आकर्षण बना रहे। रामलीला में समयानुरूप पात्रों की वेश–भूषा, दृश्य संयोजन, ध्वनि व्यवस्था, कर्णप्रिय संगीत, एवं विभिन्न राग–रागनियों व तालों में निबद्ध गीतों आदि का विशेषज्ञों द्वारा किया जाने वाला संयोजन ही रामलीला को एक अलग आकर्षण प्रदान करता है।रामलीला मंचन की परंपरा को भावी पीढियों तक लोकप्रिय बनाने हेतु इसे विद्यालयी पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत शामिल किया जाना चाहिये। स्थानीय जनता के साथ ही सरकार को भी रामलीला समितियों को समय–समय पर सहायता प्रदान करनी चाहिये एवं इससे जुड़े कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्धन हेतु समय–समय पर पुरस्कृत किया जाना चाहिए। प्रेस एवं मीडिया की सहायता से रामलीला समितियों को समय–समय पर रामलीला मंचन से जुड़ी पत्र–पत्रिकाओं, स्मारिकाओं का प्रकाशन करना चाहिये, जिससे समाज में यह लोक परंपरा सदैव बनी रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https:en.m.wikipedia.org/ramlila
2. बुल्के,कामिल–2015,रामकथा की उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, पृ0–158
3. सकलानी,डी0पी0–2013,रामायण ट्रेडिशन इन परफोर्मिंग आर्ट, अश्वनी अग्रवाल द्वारा सम्पादित–लीगेसी ऑफ इण्डियन आर्ट, आर्यन बुक्स इण्टरनेशनल, प्रथम संस्करण, पृ0–159

4. तिवारी,चन्द्रशेखर—2011,कुंमाऊं अंचल में रामलीला की परंपरा, दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र, देहरादून, पृ0—7
5. बहुगुणा,अद्वैत—2014,सागर से हिमालय तकः रामलीला, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी,पृ0—22
6. रावत,सम्पूर्ण सिंह—2015,स्मृति के दर्पण में, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0—40
7. वही, पृ0—40
8. लोहनी,भोलादत्त—2015, बातें जो इतिहास का हिस्सा बन गई, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0—22
9. ढौंडियाल,अजयशंकर—2015,जयहरीखाल रामलीला की यात्रा, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0—47
10. वही, पृ0—51
11. जोशी,प्रभाकर—अक्टूबर 2015,भगवान राम की जन्मस्थली देवप्रयाग की रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—6
12. वही, पृ0—7
13. वही, पृ0—8
14. रावत,अजय—अक्टूबर 2015, धार्मिक सामाजिक आयोजन छ धारी कि रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—20
15. वही, पृ0—20
16. वही, पृ0—21
17. पंवार,अजीत—जनवरी 2011,समृद्ध परम्परा है श्रीनगर गढ़वाल में रामलीला की, संजय कोठियाल द्वारा सम्पादित युगवाणी, युगवाणी प्रेस, देहरादून,पृ0—20
18. वही, पृ0—21
19. जोशी,शैलेन्द्र—अक्टूबर 2015,भगवान कमलेश्वर की धरती मा रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी,पृ0—12
20. वही, पृ0—12
21. पंवार अजीत—2014, उत्तराखं डमें रामलीला की समृद्ध परंपरा, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन पौड़ी, पृ0—17
22. भट्ट दिवा— प्रथम संस्करण 1998, उत्तराखंड की लोक साहित्य परंपरा, श्री अल्मोडा बुक डिपो,पृ0—45
23. वही,पृ0—47
24. रावत,विनोद—2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल क्षरा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन पौडी, पृ0—38
25. कोटनाला,अश्वनी—2015, पर्दे के पीछे कुछ यूँ हुई रामलीला, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—59
26. रावत,विनोद—2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी,पृ0—36
27.. वही, पृ0—36
28. थपलियाल,पूरणचन्द्र—2014, एक याद पुरानी, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—90
29. रावत,विनोद—2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—38
30. थापा,प्रेम बहादुर—2015, साक्षात्कार, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—84
31. वर्मा, भावना—2015, चौथी पीढी के घुटनों के बल चलने लगी है रामलीला, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—12
32. नेगी,आशुतोष—2014, रामलीला के 113वर्षों का सफर, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—12
33. वही, पृ0—13
34. वही, पृ0—13
35. संपादकीय टीम— 2014, रामलीला की पेंटिग्स आज भी याद दिलाती हैं, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—61
36. वही, पृ0—61
37. ढौंडियाल,अजयशंकर—2015, जयहरीखाल रामलीला की यात्रा, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—50
38. वही, पृ0—50
39. कोटनाला,अश्वनी—2015, परदे के पीछे कुछ यूँ हुई रामलीला, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—60
40. जोशी,शैलेन्द्र—अक्टूबर 2015, भगवान कमलेश्वर की धरती मा रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—12
41. रावत,अजय—अक्टूबर 2015, धार्मिक सामाजिक आयोजन छ धारी की रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी,पृ0—20
42. उप्रेती,पंकज—2008, कुंमाऊं की रामलीला, पिघलता हिमालय प्रकाशन, हल्द्वानी, पृ0—12
43. रावत,मनोज—2014, राष्ट्रीय स्तर भी गूँजी पौड़ी रामलीला की स्वर लहरियाँ, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—31

44. वही, पृ0—32
45. रावत,मोहन सिंह—2014, शोध का खजाना है पौड़ी रामलीला का शास्त्रीय संगीत, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी,पृ0—107
46. जोशी,शैलेन्द्र—अक्टूबर 2015, भगवान कमलेश्वर की धरती मा रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—12
47. रावत,सम्पूर्ण सिंह—2015, स्मृति के दर्पण में, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—40
48. जोशी प्रभाकर—अक्टूबर 2015, भगवान श्री राम की तपस्थली देवप्रयाग की रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—6
49. वही, पृ0—7
50. रावत,विनोद—2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—37
51. खण्डेलवाल कुलदीप—2015, हिन्दू—मुस्लिम दोंनों की रही है रामलीला, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—76
52. वही, पृ0—76
53. रावत अजय— अक्टूबर 2015, धार्मिक सामाजिक आयोजन छ धारी कि रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0—21
54. वही, पृ0—21
55. रावत,सम्पूर्ण सिंह—2015,स्मृति के दर्पण में, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0—42
56. नैथानी,देवेन्द्र—2015, अभिनय की पाठशाला थे राजू पधान, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,देहरादून,पृ0—79
57. संपादकीय टीम—2014,गजब की अभिनय क्षमता थी मन्ना बाबू में, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी, पृ0—49
58. वही, पृ0—50
59. बैंकर,अशोक के0—2015,प्रिंस ऑफ अयोध्या, मंजुल पब्लिशिंग हाउस, पृ0—15
60. पोद्दार,हनुमान प्रसाद—2015, टीकाकार,रामचरितमानस, 108वां संस्करण, गीता प्रेस,पृ0—37

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा विस्तार।
सुनि आचराजु न मानिहहिं जिन्ह के बिमल बिचार।।

डी. पी. सकलानी
प्रोफेसर ,इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे.न.ब.ग.वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org